अध्याय 9: छोटा मेरा खेत / बगुलों के पंख

विषय-सूची 2 प्रश्नावली · 6 प्रश्न

प्रश्नावली 9.1	कविता के साथ	4 प्रश्न
प्रश्नावली 9.2	कविता के आसपास	2 प्रश्न

प्रश्नावली 9.1 — कविता के साथ

प्रश्न 1

छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है?

हल

कवि उमाशंकर जोशी ने कागज के पन्ने को खेत की संज्ञा दी है — दोनों चौकोने और सीमित आकार के होते हैं।
जैसे खेत में किसान बीज बोकर फसल उगाता है, उसी प्रकार कवि कागज के पन्ने पर शब्द-बीज बोकर रचना की फसल उगाता है।
यह रूपक कवि-कर्म को कृषि-कर्म के समतुल्य बताता है — दोनों में श्रम, प्रतीक्षा और अंततः फल की प्राप्ति होती है।
इस तुलना में यह भी निहित है कि खेत सीमित होने पर भी असीमित अन्न दे सकता है, उसी प्रकार कागज का छोटा पन्ना असीमित अर्थ और रस उत्पन्न करने में समर्थ होता है।
इस प्रकार कवि ने काव्य-सृजन की प्रक्रिया को एक चौकोने खेत में समाहित कर दिया है।

उत्तर: छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहने में यह अर्थ निहित है कि कवि का कागज भी खेत की तरह सीमित है, किंतु उसमें बोया गया शब्द-बीज असीमित रस-फसल उत्पन्न करता है।

प्रश्न 2

रचना के संदर्भ में अंधड़ और बीज क्या हैं?

हल

कविता में 'अंधड़' रचनाकार के मन में आने वाली भावनात्मक आँधी का प्रतीक है।
यह वह तीव्र आवेग, कोई गहरा अनुभव या भावनात्मक उद्वेलन होता है जो अचानक कवि के मन में उठता है और उसे रचना के लिए प्रेरित करता है।
'बीज' उस मूल विचार, भाव या अनुभव का प्रतीक है जो उस आँधी के प्रभाव से कवि के मन (खेत) में बोया जाता है।
यही बीज-रूप विचार या अनुभव कल्पना के रसायनों को पीकर विकसित होता है, विगलित होता है और अंततः शब्दों के अंकुर के रूप में फूटता है।
संक्षेप में — अंधड़ = भावनात्मक प्रेरणा/आवेग; बीज = मूल विचार या अनुभव जो रचना का आधार बनता है।

उत्तर: रचना के संदर्भ में 'अंधड़' भावनात्मक आवेग या प्रेरणा है और 'बीज' वह मूल विचार या अनुभव है जो उस आवेग से उत्पन्न होकर रचना का आधार बनता है।

प्रश्न 3

रस का अक्षयपात्र से कवि ने रचनाकर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है?

हल

कवि ने 'रस का अक्षय पात्र' के माध्यम से रचनाकर्म की निम्न विशेषताओं की ओर संकेत किया है:

1. कालजयिता — उत्तम साहित्यिक कृति का रस कभी समाप्त नहीं होता; वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी पाठकों को आनंद देती रहती है।
2. अक्षय प्रकृति — खेत की फसल एक बार काटने पर समाप्त हो जाती है, किंतु कविता का रस लुटाते रहने से भी कम नहीं होता।
3. अनंत पाठक-क्षमता — अनगिनत पाठक अनगिनत बार पढ़ें, रचना का आनंद जस का तस बना रहता है।
4. क्षण-रोपाई और अनंत-कटाई का विरोधाभास — रचना का सृजन एक क्षण में होता है, किंतु उसका आस्वाद अनंत काल तक होता रहता है।

उत्तर: 'रस का अक्षय पात्र' से कवि ने संकेत दिया है कि साहित्यिक कृति का रस कभी समाप्त नहीं होता — क्षण में लिखी गई रचना अनंत काल तक अनगिनत पाठकों को आनंद देती रहती है।

प्रश्न 4

व्याख्या करें — 1. शब्द के अंकुर फूटे, पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष। 2. रोपाई क्षण की, कटाई अनंतता की लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।

हल

पंक्ति 1 — 'शब्द के अंकुर फूटे, / पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।'

संदर्भ: कागज-रूपी खेत में अंधड़ (भावनात्मक आँधी) के द्वारा बोए गए बीज (मूल विचार) ने कल्पना के रसायनों को पीकर अंकुरण किया।

व्याख्या: बीज-रूप विचार कल्पना की शक्ति से पुष्ट होकर शब्दों के रूप में प्रकट हुआ — 'शब्द के अंकुर फूटे' अर्थात् रचना अभिव्यक्ति पाने लगी।

धीरे-धीरे वह रचना पल्लव-पुष्पों (विचारों के विस्तार और भावों की सुंदरता) से इतनी समृद्ध हो गई कि झुकने लगी — 'पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष' अर्थात् रचना फल-फूल से भरे वृक्ष की भाँति परिपक्व और भरपूर हो गई।

यह कवि-कर्म की वृद्धि और परिपक्वता की अवस्था को दर्शाता है।

पंक्ति 2 — 'रोपाई क्षण की, / कटाई अनंतता की / लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।'

संदर्भ: खेत (कागज-पन्ने) में बीज-रूप विचार की रोपाई एक क्षण में होती है, किंतु उसकी कटाई अनंत काल तक चलती है।

व्याख्या: 'रोपाई क्षण की' — कविता का सृजन एक भावनात्मक क्षण में होता है।

'कटाई अनंतता की' — किंतु उस एक कविता का रस अनगिनत पाठक अनंत काल तक ग्रहण करते रहते हैं।

'लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती' — साहित्यिक रचना का रस जितना बाँटा जाए, उतना ही बढ़ता है; अन्न की

भाँति समाप्त नहीं होता।

यह पंक्तियाँ साहित्य की अक्षय और कालजयी प्रकृति को अत्यंत सुंदर ढंग से व्यक्त करती हैं।

उत्तर: पंक्ति 1 में रचना की अभिव्यक्ति और परिपक्वता का वर्णन है — विचार-बीज से शब्द-अंकुर फूटे और कृति पल्लव-पुष्पों से परिपूर्ण हो गई। पंक्ति 2 में साहित्य की कालजयिता का वर्णन है — रचना एक क्षण में होती है किंतु उसका रस अनंत काल तक लुटाने से भी कम नहीं होता।

प्रश्नावली 9.2 — कविता के आसपास

प्रश्न 1

शब्दों के माध्यम से जब कवि दृश्यों, चित्रों, ध्वनि-योजना अथवा रूप-रस-गंध को हमारे ऐंद्रिक अनुभवों में साकार कर देता है तो बिंब का निर्माण होता है। इस आधार पर प्रस्तुत कविता से बिंब की खोज करें।

हल

प्रस्तुत दोनों कविताओं में निम्नलिखित प्रमुख बिंब मिलते हैं:

छोटा मेरा खेत — बिंब:

1. दृश्य-बिंब (Visual): 'छोटा मेरा खेत चौकोना / कागज का एक पन्ना' — कागज का चौकोना टुकड़ा जो खेत जैसा दिखाई देता है।
2. गति-बिंब: 'कोई अंधड़ कहीं से आया / क्षण का बीज वहाँ बोया गया' — आँधी का आना और बीज का बोया जाना।
3. स्पर्श-बिंब: 'कल्पना के रसायनों को पी / बीज गल गया निःशेष' — बीज का रसायनों में गलना।
4. दृश्य-बिंब: 'शब्द के अंकुर फूटे, / पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष' — अंकुर फूटने और पल्लव-पुष्पों से लदे झुके वृक्ष का चित्र।
5. दृश्य-बिंब: 'झूमने लगे फल' — फलों से लदा झूमता पेड़।
6. रस-बिंब: 'रस अलौकिक, / अमृत धाराएँ फूटतीं' — अमृत-रस की धाराओं का प्रवाह।

बगुलों के पंख — बिंब:

1. दृश्य-बिंब (Visual): 'नभ में पाँती-बँधे बगुलों के पंख' — आकाश में कतार बनाकर उड़ते सफेद बगुलों का चित्र।
2. दृश्य-बिंब: 'कजरारे बादलों की छाई नभ छाया' — काले बादलों से आच्छादित आकाश।
3. दृश्य-बिंब: 'तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया' — साँझ के समय सफेद आकृति का तैरना।
4. गति-बिंब: 'हौले हौले जाती मुझे बाँध निज माया से' — धीरे-धीरे मन को बाँधते दृश्य की अनुभूति।

उत्तर: छोटा मेरा खेत में प्रमुख बिंब हैं — अंकुर फूटने का दृश्य-बिंब, अमृत-धाराओं का रस-बिंब और झूमते फलों का दृश्य-बिंब। बगुलों के पंख में — कतारबद्ध बगुलों का दृश्य-बिंब, काले बादलों का दृश्य-बिंब और 'हौले हौले बाँधने' का गति-बिंब।

प्रश्न 2

जहाँ उपमेय में उपमान का आरोप हो, रूपक कहलाता है। इस कविता में से रूपक का चुनाव करें।

हल

छोटा मेरा खेत कविता में रूपक अलंकार के प्रमुख उदाहरण:

1. 'छोटा मेरा खेत चौकोना / कागज का एक पन्ना' — कागज के पन्ने (उपमेय) पर खेत (उपमान) का आरोप। कागज को ही खेत कहा गया है।
2. 'शब्द के अंकुर फूटे' — शब्द (उपमेय) पर अंकुर (उपमान) का आरोप। शब्दों को ही पौधे के अंकुर बताया गया

है।

3. 'पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष' — कविता (उपमेय) पर पल्लव-पुष्पों से लदे वृक्ष (उपमान) का आरोप।
4. 'झूमने लगे फल, / रस अलौकिक' — कविता के भाव (उपमेय) पर फल और रस (उपमान) का आरोप।
5. 'रस का अक्षय पात्र' — साहित्यिक कृति (उपमेय) पर अक्षय पात्र (उपमान) का आरोप।
6. 'क्षण का बीज वहाँ बोया गया' — भावनात्मक विचार (उपमेय) पर बीज (उपमान) का आरोप।

पूरी 'छोटा मेरा खेत' कविता एक विस्तृत रूपक (सांगरूपक) है जिसमें कवि-कर्म की संपूर्ण प्रक्रिया को कृषि-कर्म के रूपक में प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर: इस कविता में 'कागज का पन्ना = खेत', 'शब्द = अंकुर', 'भाव = फल-पुष्प' तथा 'साहित्यिक कृति = रस का अक्षय पात्र' — ये प्रमुख रूपक हैं। पूरी कविता एक सांगरूपक है जिसमें काव्य-सृजन को कृषि-कर्म के रूपक में प्रस्तुत किया गया है।